Dabang Dunia (Indore), 14th September 2019, Page-4

शिक्षण, शोध और अनुसंधान के क्षेत्र में देश को आगे बढ़ाने की जरूरत

पिछले एक दशक से देश के मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा अनेक प्रयास किए जा रहे थे, ताकि भारत के नामचीन विश्वविद्यालय शीर्ष स्तर पर जगह बना सकें। पिछले साल लागू की गई इंस्टीट्यूट ऑफ एमीनेंस (आईओई) नामक बहुचर्चित योजना का तो यह प्रमुख लक्ष्य था। कोशिश थी कि देश के अच्छे विश्वविद्यालयों को ज्यादा स्वायत्तता दी जाए और केंद्र सरकार द्वारा संचालित उच्च शिक्षण संस्थानों को दस वर्षों के लिए एक हजार करोड़ रुपए की वित्तीय सहायता दी जाए। लेकिन देश के विश्वविद्यालयों को स्पर्द्धा-योग्य बनाने के प्रयासों को ब्रिटेन की टाइम्स हायर एजुकेशन द्वारा घोषित 2020 की विश्वविद्यालय रैंकिंग सूची से धक्का लगा है।

बहरहाल, विश्व स्तर पर शीर्ष विश्वविद्यालयों की रैंकिंग मुख्यतः तीन संस्थाओं द्वारा की जाती है- टाइम्स हायर एजुकेशन (टीएचई), शंघाई जियोटोंग यूनिवर्सिटी (एसजेटीयू) और क्विरैली सायमंड्स (क्यू एस)। इनमें सर्वाधिक लोकप्रियता व मान्यता टाइम्स हायर एजुकेशन संस्था की है, जो पिछले 16 वर्षों से इसे संचालित करती रही है। बड़े अफसोस की बात है कि वर्ष 2020 की रैंकिंग में 2012 के बाद पहली बार शीर्ष 200 विश्वविद्यालयों में किसी भारतीय विश्वविद्यालय का नाम नहीं है। टाइम्स रैंकिंग में वैसे तो दुनिया के शीर्ष 1,300 विश्वविद्यालयों में भारत के 56 नाम शामिल हैं और संख्या की दृष्टि से भारत का विश्व में पांचवां व एशिया में तीसरा स्थान है।

गौरतलब है कि 2020 की टाइम्स रैंकिंग में भारत का ख्याति प्राप्त संस्थान इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस 50 स्थान नीचे गिर गया है। 1909 में जमशेदजी टाटा और मैसूर नरेश के प्रयासों से स्थापित इस संस्थान की रैंकिंग 2019 में 251-300 के समूह में थी, जो इस बार 301-350 के समूह में पहुंच गई है। इस संस्थान के अलावा आईआईटी-रोपड़ को 301-350 और आईआईटी-इंदौर

विचार

को 351-400 के समूह में रैंकिंग दी गई है। अगर पुराने और प्रतिष्ठित आईआईटी को देखें, तो आईआईटी-मुंबई, आईआईटी-खड़गपुर और आईआईटी-दिल्ली को 401-500 के ग्रुप में शामिल किया गया है। पुराने आईआईटी को नए आईआईटी कड़ी चुनौती दे रहे हैं।

टाइम्स की रैंकिंग में शुरू से अमेरिकी यूनिवर्सिटियों का दबदबा रहा है। इस बार भी शीर्षस्थ 10 यूनिवर्सिटियों में सात और शीर्षस्थ 20 यूनिवर्सिटियों में 14 अमेरिका की हैं। शीर्ष 200 में अमेरिका की 60 यूनिवर्सिटी शामिल हैं। शीर्ष 200 में एशिया से पहला स्थान चीन का है, जिसके 24 विश्वविद्यालय इसमें शामिल हैं। टाइम्स की रैंकिंग में ब्रिटेन की ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी आम तौर पर विश्व में पहले स्थान पर रही है। 2020 में भी इसे पहला स्थान मिला है।

2020 की टाइम्स रैंकिंग का विश्लेषण करने पर मालूम पड़ता है कि भारत के उच्च शिक्षा संस्थान पढ़ाई-लिखाई और उद्योगों से जुड़ाव के मामले में तो अच्छा प्रदर्शन करते हैं, लेकिन अनुसंधान के क्षेत्र में मात खा जाते हैं। एक ओर, भारतीय प्रोफेसरों में शोध पत्र प्रकाशित करने की उद्यमिता और उत्साह कम है, तो दूसरी ओर, उनके शोध पत्रों के उद्धरण अपेक्षाकृत बहुत कम दिए जाते हैं।

दुखी और निराश होने से काम नहीं चलेगा। केंद्र और राज्य सरकारों को मिल-जुलकर उच्च शिक्षा को प्राथमिकता देनी पड़ेगी। उच्च शिक्षा पर सकल राष्ट्रीय आय का एक से 1.5 प्रतिशत खर्च करने से काम नहीं चलेगा, इसे अगले तीन वर्षों के भीतर 2.5 प्रतिशत करना होगा। अभी हाल में कस्तूरीरंगन कमेटी ने नई शिक्षा नीति के प्रस्तावित मसौदे में शोध और अनुसंधान पर 20,000 करोड़ रुपए की वार्षिक राशि खर्च करने का प्रस्ताव रखा है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। हमें अच्छे यूनिवर्सिटी शिक्षकों और शोधकर्ताओं को प्रतिष्ठाजनक स्थान देना होगा और देखना होगा कि वे देश में ही रहकर शिक्षण, शोध व अनुसंधान के काम करें। उनका पलायन किसी भी हालत में रोकना होगा।